Anand
DATE :
PAGE NO. :

ऑडियो, विडियो रिकॉर्डिंग एवं कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नः- 10
ट्रैक नः- ZOOM0007.WAV
ट्रैक समयावधि :-
कलाकार का नाम :- [redacted] / [redacted] सफी खाँ / फकीर खाँ
पता :- गाँव बड़नावा-चारणान्, तेह- पचपदरा, जिला - बाड़मेर।

सहायक कलाकार :- ~~समदर खाँ / असकर खां~~
सिकन्दर खां (हारमोनियम एण्ड गायन) रमजान (गायन) जाकीर (ढोलक)
हासम खां (खड़ताल) सिकन्दर खां (सारंगी)

विडियो रिकॉर्डिंग समय :-
विषय :- [redacted] ([redacted]) गाथा (ढोला-मारू)
विशेष विवरण :-

दिनांक :- 28/03/2021
स्थान :- बड़नावा चारणान् (लखे दाणी)
वाद्य :- हाँ
गायन :- हाँ

Anand
DATE
PAGE NO :

ढोला मारु की गाथा कई प्रचलित गाथाओं में से एक महत्वपूर्ण गाथा है श्रृंगार रस की गाथा, ढोला मारु में ढोला मारु का प्रम सयोग - वियोग का मार्मिक चित्रण है।

गाथा की शुरुआत राजा हँस से होती है राजा हँस को शिकारी द्वारा पकड़कर शहर मे ले जाने पर राजा खरीद लेता है। राजा कई दिन वही रहता है तो रानी और हँस के बीच में प्रेम हो जाता है तो रानी हँस से कहती है - तथा हँस रानी से कहता है - हाल हँसला सींसर में टुकियक मौज करो।

तु बण पुगल गढ़ री पदमणी, मैं नरवर कोट धरा॥

और दोनो का दुबारा जन्म होता है तो हँस का जन्म नरवर कोट में राजा के घर होता है और नाम ढोलाजी रखा जाता है और रानी का जन्म पुगल के राजा के घर होता है और नाम मारु रखा जाता है तो पुगल के राजा नल इलाक से नरवर कोट के राजा पींगल के घर जाता है और ढोलाजी और मारु की बचपन में शादी करवा देते है और वापिस पुगल चला जाता है तथा कई वर्ष बीत जाते है राजा पींगल की मृत्य के बाद ढोलाजी दुसरी शादी कर लेता है। मारु शादी नही करती है वह ढोलेजी के आने की प्रतीक्षा करती है तथा ढोलजी नही जाता है तो मारु कुछ दोहे सन्देशवाहक को देकर नरवर कोट भेजती है और नरवर कोट जाकर दोहे कहता है और किसी तरह से ढोलाजी को सुना देता है तथा ढोलाजी सब समझ जाता है और नरवर कोट जाता है तथा मारु को लेकर पुगल आजाता है और आगे का जीवन आनंदपूर्ण व्यतित करते है।